1. सकल घरेलू उत्पाद की अवधारणा
(CONCEPT OF GDP)

एक लेखा वर्ष में एक देश की घरेलू सीमा के अन्दर उत्पादित अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के बाजार मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) कहा जाता है। इसे एक लेखा वर्ष की घरेलू सीमा के अन्दर सभी उत्पादन इकाइयों द्वारा की गई **सकल मूल्य वृद्धि** (Gross Value Added) के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है।

GDP की अवधारणा को भली-भाँति समझने के लिए हमें निम्नलिखित तीन अवधारणाओं को भली-भाँति समझना होगा—

1. मूल्य वृद्धि (Value Addition)
2. अन्तिम वस्तुएँ (Final Goods)
3. घरेलू क्षेत्र (Domestic Territory)।

1. मूल्य वृद्धि (Value Addition)—GDP की गणना करते समय हम फर्म द्वारा की गयी मूल्य वृद्धि को सम्मिलित करते हैं इसके उत्पादन मूल्य को नहीं। **मूल्य वृद्धि** से अभिप्राय यह है कि **उत्पादन की प्रत्येक अवस्था में फर्म द्वारा वस्तु के मूल्य में कितनी वृद्धि की जाती है। संक्षेप में, जब कुछ आगतों (Inputs) को उत्पादन (Output) में परिवर्तित किया जाता है तब इसे मूल्य वृद्धि कहते हैं।**

उदाहरण—मान लीजिए एक फर्म ₹ 2,400 का मैदा खरीदता है और इससे डबल रोटी या ब्रेड का रूप देता है और जिन्हें वह ₹ 3,200 में बेच देता है। इस प्रकरण में—

मूल्य वृद्धि = ब्रेडों की कीमत – मैदा की कीमत
800 = 3,200 – 2,400

अत: **मूल्य वृद्धि उत्पादन के मूल्य और मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य का अन्तर होता है। अर्थात्**

मूल्य वृद्धि = उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग व्यय

अत: **मूल्य वृद्धि अथवा उत्पादन एक ही बात है।**

उपर्युक्त अवधारणाओं को स्पष्ट करने के बाद हम GDP की परिभाषा निम्न प्रकार कर सकते हैं—

एक लेखा वर्ष के दौरान एक देश की घरेलू सीमा के अन्दर सभी उत्पादक इकाइयों द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के बाजार मूल्य के जोड़ को सकल घरेलू उत्पाद कहा जाता है।

2. अन्तिम वस्तुएँ (Final Goods)—उपभोक्ताओं द्वारा उपभोग या उत्पादकों द्वारा निवेश के लिए खरीदे गये पदार्थों को हम अन्तिम वस्तुएँ मानते हैं। **इनका आगे निर्माण या पुन: विक्रय नहीं होता।** उदाहरणत: उपभोक्ता द्वारा खरीदे गये डबलरोटी, मक्खन, बिस्कुट आदि।

मध्यवर्ती वस्तुओं को राष्ट्रीय आय के आकलन में शामिल नहीं किया जाता। केवल अन्तिम वस्तुएँ ही राष्ट्रीय आय की गणना में जोड़ी जाती है। इसका कारण बहुत सीधा है : मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य अन्तिम वस्तुओं के मूल्य में निहित होता है। इनको (मध्यवर्ती) अलग से जोड़ लिया गया तो दोहरी गणना की समस्या उत्पन्न हो जायेगी।

अन्तिम तथा मध्यवर्ती वस्तुओं में मुख्य अन्तर
(The Principal Differences between Final and Intermediate Goods)

क्र. सं.	मध्यवर्ती वस्तुएँ (Intermediate Goods)	अन्तिम वस्तुएँ (Final Goods)
1.	इन वस्तुओं का उपयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन हेतु कच्चे माल के रूप में किया जाता है।	इन वस्तुओं का उपयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन हेतु कच्चे माल के रूप में नहीं किया जाता है।
2.	लाभ की दृष्टि से इन वस्तुओं की पुन: बिक्री की जाती है।	लाभ की दृष्टि से इन वस्तुओं की पुन: बिक्री नहीं की जाती है।
3.	ये वस्तुएँ अन्तिम-प्रयोगकर्ता द्वारा उपयोग के लिए तैयार नहीं होती।	ये वस्तुएँ अन्तिम प्रयोगकर्ता द्वारा उपयोग के लिए तैयार होती है।
4.	इन वस्तुएँ को राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय के अनुमान में सम्मिलित नहीं किया जाता है।	इन वस्तुओं को राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय के अनुमान में सम्मिलित किया जाता है।

3. **घरेलू क्षेत्र** (Demestic Territory)—ये घरेलू क्षेत्र (आर्थिक क्षेत्र) की अवधारणा देश की भौगोलिक सीमाओं के विचार से अलग होती है। घरेलू क्षेत्र में निम्न सम्मिलित हैं—

(i) देश की राजनीतिक सीमाएँ—सीमान्तर्गत जल क्षेत्रों सहित।

(ii) देश के सामान्य नागरिकों द्वारा विभिन्न देशों के बीच संचालित जल एवं वायुयान। उदाहरणत: विभिन्न देशों के बीच उड़ान भरते एयर इण्डिया के वायुयान।

(iii) मछुआरों के जहाज, तेल-गैस, अन्वेषण एवं उत्पादन हेतु महासागरों में खुदाई करने के लिए लगाए गए यंत्रादि। ये अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं में या जहाँ हमारे देश को एकाधिकार प्राप्त हो वहाँ काम करते हैं और इनका संचालन हमारे देश के सामान्य नागरिक करते हैं।

(iv) अन्य देशों मे स्थित हमारे दूतावास, वाणिज्य दूतावास और सैन्य शिविर आदि। जैसे—अमेरिका, जापान आदि में भारतीय दूतावास। किन्तु भारत में स्थित अन्य देशों के दूतावास आदि भारत की भौगोलिक सीमा में होते हुए भी भारत की आर्थिक दृष्टि से आन्तरिक क्षेत्र का हिस्सा नहीं माने जायेंगे।

अत: देश के घरेलू क्षेत्र को हम राजनीतिक क्षेत्र, क्षेत्रीय महासागर, जल एवं वायुयान, मछुआरों की नौकादि, अन्य देशों में राजदूतावास एवं वाणिज्य दूतावास आदि के समूह के रूप में परिभाषित करते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि जब अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादक को बाजार मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है तब सकल घरेलू उत्पाद को प्राय: **बाजार कीमत** (Market Price = MP) पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) लिखा जाता है।

I. बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद
(GROSS DOMESTIC PRODUCT AT MARKET PRICE GDP_{MR})

सकल घरेलू उत्पाद से हमारा आशय एक देश की घरेलू सीमा में एक वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य से है।

अर्थव्यवस्था में अनेक क्षेत्रों में उत्पादन क्रिया चलती रहती है जिसमें चीनी, कपड़ा, स्टील, खाद, गेहूँ आदि वस्तुओं तथा सरकारी प्रकाशन, बैंक, बीमा तथा परिवहन आदि सेवाओं का निर्माण होता है। इन समस्त वस्तुओं एवं सेवाओं के बाजार मूल्य के जोड़ को ही सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं।

परन्तु वास्तव में किसी देश की अर्थव्यवस्था में तीन वस्तुओं के स्थान पर सैकड़ों व हजारों किस्म की वस्तुएँ और सेवाएँ होती हैं जिनके कुल बाजार मूल्य को उपरोक्त प्रकार से ज्ञात किया जा सकता है। सकल घरेलू उत्पाद की गणना **बाजार कीमत** पर किये जाने के कारण इसे **बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद** (GDP at Market Price) भी कहा जाता है।

सूत्र रूप में, $GDP_{MP} = P(O)\ P(S)$

जहाँ पर, P = प्रति इकाई मूल्य, O = भौतिक वस्तुएँ, S = भौतिक सेवाएँ।

सकल घरेलू उत्पाद में निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्र के उत्पादन को शामिल किया जाता है। इसे निम्नलिखित रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है—

$$GDP_{MP} = C_p + C_g + I_p + I_g$$

जिसमें C_p = निजी क्षेत्र में उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन

C_g = सरकारी क्षेत्र में उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन

I_p = निजी क्षेत्र में पूँजीगत वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन

I_g = सरकारी क्षेत्र में पूँजीगत वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन

II. बाजार की कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद
(NET DOMESTIC PRODUCT AT MARKET PRICE NDP_{MR})

यह सामान्य अनुभव की बात है कि उत्पादन के दौरान पूँजीगत वस्तुओं, जिस प्रकार मशीनों, उपकरणों, औजारों, ट्रेक्टरों, फैक्ट्री की इमारतों आदि का ह्रास होता है। एक समय-अवधि के बाद इन पूँजीगत वस्तुओं का प्रतिस्थापन आवश्यक हो जाता है इसलिए कुल उत्पादन में से एक हिस्सा घिसावट व्यय के लिए अलग रखना होता है। इस प्रकार सकल घरेलू उत्पाद में से घिसावट-व्यय को घटाने पर शुद्ध घरेलू उत्पाद प्राप्त होता है।

सूत्र रूप में, बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद = सकल घरेलू उत्पाद—ह्रास

$(NDP_{MP} = GDP_{MP} - Depreciation)$

उदाहरण 1. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सकल एवं शुद्ध घरेलू उत्पाद का मूल्य ज्ञात कीजिए—

सारणी 2

मदें	राशि (₹ करोड़)	मदें	राशि (₹ करोड़)
(i) उपभोक्ता वस्तुओं का मूल्य	360	(iv) पूँजीगत सेवाओं का उत्पादन	36
(ii) उपभोक्ता सेवाओं का मूल्य	96	(v) ह्रास	12
(iii) पूँजीगत वस्तुओं का उत्पादन	192		

हल—सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) = उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन + उपभोक्ता सेवाओं का उत्पादन + पूँजीगत वस्तुओं का उत्पादन + पूँजीगत सेवाओं का उत्पादन

= 360 + 96 + 192 + 36 = ₹ 684 करोड़

शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{MP}) = सकल घरेलू उत्पाद – ह्रास

= 684 – 12 = ₹ 672 करोड़

उदाहरण 2. बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद की गणना कीजिए—

सकल घरेलू उत्पादन = ₹ 6,000 करोड़

ह्रास = ₹ 600 करोड़

हल— शुद्ध घरेलू उत्पाद = सकल घरेलू उत्पाद – ह्रास

= 6,000 – 600 = ₹ 5,400 करोड़

III. सकल राष्ट्रीय उत्पाद
(GROSS NATIONAL PRODUCT OR GNP_{MP})

सकल राष्ट्रीय उत्पाद राष्ट्रीय उत्पाद की एक प्रमुख अवधारणा है। यह राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित सबसे व्यापक अवधारणा है। सकल राष्ट्रीय उत्पाद से हमारा आशय अर्थव्यवस्था में एक निश्चित वर्ष में उत्पादित

अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य से होता है। इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय (निर्यात-आयात) भी शामिल की जाती है। अत: **सकल राष्ट्रीय उत्पाद को सकल घरेलू उत्पाद तथा विदेशों से शुद्ध साधन आय के जोड़ के रूप में परिभाषित किया जाता है।**

सूत्र के रूप में,

बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद = सकल घरेलू उत्पाद + विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय

$$GNP_{MP} = GDP_{MP} + \text{Excess of Exports}$$

इस प्रकार सकल राष्ट्रीय उत्पाद और सकल घरेलू उत्पाद के बीच का अन्तर विदेशों से शुद्ध साधन आय के बराबर होता है।

अब हम विदेशों से शुद्ध साधन के अर्थ और उसके घटकों को समझने का प्रयास करेंगे।

विदेशों से शुद्ध साधन आय (Net Factor Income from Abroad, NFIA)

विदेशों से शुद्ध साधन आय एक देश के सामान्य निवासियों द्वारा दूसरे देशों को अपनी साधन सेवाएँ व सम्पत्ति प्रदान करने के बदले प्राप्त आय (लगान, मजदूरी, ब्याज तथा लाभांश) और इस देश की घरेलू सीमा में विदेशियों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बदले में दी गई आय के अन्तर के बराबर होता है इस प्रकार—

विदेशों से शुद्ध साधन आय (Net Factor Income from Abroad—NFIA) = देश के निवासियों द्वारा विदेशों से अर्जित साधन आय — गैर-निवासियों द्वारा हमारे देश में अर्जित साधन आय।

उदाहरण 3. मान लीजिए वर्ष 2023-24 में एक अर्थव्यवस्था का बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद ₹ 1,25,000 करोड़ और विदेशों से शुद्ध साधन आय + ₹ 250 करोड़ है। अर्थव्यवस्था का बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात कीजिए।

हल— $GNP_{MP} = GDP_{MP} + NFIA$ = ₹ 1,25,000 करोड़ + ₹ 250 करोड़

= ₹ 1,25,250 करोड़

GNP_{MP} का मूल्य GDP_{MP} से कम हो सकता है और अधिक भी हो सकता है। यह इस बात पर निर्भर है कि विदेशों से शुद्ध साधन आय **धनात्मक है** या **ऋणात्मक**। यदि (i) विदेशों से शुद्ध साधन आय धनात्मक होती है तो सकल राष्ट्रीय उत्पाद, सकल घरेलू उत्पाद से अधिक होता है। (ii) इसके विपरीत यदि विदेशों से शुद्ध साधन आय ऋणात्मक होती है तो सकल राष्ट्रीय उत्पाद, सकल घरेलू उत्पाद से कम होता है।

सकल या कुल राष्ट्रीय आय की परिभाषा
(DEFINITION OF GROSS NATIONAL PRODUCT)

सकल या कुल राष्ट्रीय उत्पादन की प्रमुख परिभाषाएँ निम्नानुसार हैं—

(1) **सैम्युअलसन** तथा **नौरडहस** (Paul A. Samuelson and William D. Nordhaus) के अनुसार, "सकल राष्ट्रीय उत्पादन, सरकारी क्रय सहित, उपभोग तथा विनियोग वस्तुओं के मौद्रिक मूल्य का योग है।"[1]

(2) **बायर्न्स** तथा **स्टोन** (Ralph T. Byrns and Gerald W. Stone) के अनुसार, "सकल राष्ट्रीय उत्पादन को किसी विशिष्ट समयावधि में (सामान्यत: एक वर्ष) समस्त उत्पादन के कुल बाजार मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है।"[2]

संक्षेप में, सकल राष्ट्रीय उत्पादन किसी देश में एक वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं तथा सेवाओं का माप है जिसका मूल्यांकन प्रचलित बाजार मूल्यों पर किया जाता है।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद की विशेषताएँ
(CHARACTERISTICS OF GROSS NATIONAL PRODUCT)

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) **मौद्रिक माप** (Monetary Measurement)—सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) की गणना मुद्रा के रूप में की जाती है क्योंकि मुद्रा ही समस्त वस्तुओं एवं सेवाओं को मापने का सामान्य मापदण्ड है।

(2) **बाजार मूल्य** (Market Price)—सकल राष्ट्रीय उत्पाद में केवल अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के बारे में बाजार मूल्यों का योग किया जाता है। मध्यवर्ती अथवा अर्द्धनिर्मित वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य नहीं जोड़ा जाता।

(3) **मुद्रा विनिमय** (Money Exchange)—कुल राष्ट्रीय उत्पाद की गणना में वही सभी वस्तुएँ या सेवाएँ जिनका बाजार में मुद्रा विनिमय या विक्रय होता है, सम्मिलित की जाती हैं।

(4) **केवल चालू वर्ष के उत्पादन को शामिल किया जाता है** (Only Production of Current Year is included)—GNP में केवल चालू वर्ष का उत्पादन ही बाजार मूल्य के आधार पर शामिल किया जाता है। यदि हम 2024 का GNP ज्ञात करना चाहते हैं तो उसमें केवल 2024 में ही उत्पादित वस्तुओं को शामिल किया जायेगा, उसमें 2023 की वस्तुओं को शामिल नहीं किया जायेगा, भले ही उनका विक्रय 2024 में किया जाय।

(5) **कुल राष्ट्रीय उत्पाद में मूल्य ह्रास नहीं घटाया जाता** (Depreciation not deducted)—कुल राष्ट्रीय उत्पाद में कुल (Gross) शब्द महत्वपूर्ण है। जब वस्तुओं का उत्पादन होता है तो मशीनों एवं यन्त्रों की घिसावट होती है जिससे उनमें मूल्य ह्रास (Depreciation) होता है, किन्तु GNP ज्ञात करते समय उसमें से मूल्य ह्रास अथवा प्रतिस्थापन लागत को नहीं घटाया जाता है।

(6) **अन्तिम उत्पादन** (Final Goods)—राष्ट्रीय उत्पाद के माप को दोहरी गणना से बचाने के लिए अन्तिम उत्पादन अर्थात् पक्के माल को ही शामिल किया जाता है। अन्तिम उत्पादन या अन्तिम पदार्थों से अभिप्राय उन पदार्थों से है जो अन्त में जिस उपभोक्ता या खरीददार द्वारा खरीदे जाते हैं, वह उनको आगे किसी और उपभोक्ता या खरीददार के पास नहीं बेचता बल्कि स्वयं ही उनका उपभोग कर लेता है।

दोहरी गणना की समस्या को मूल्य वृद्धि विधि (Value-added Method) के द्वारा भी दूर किया जा सकता है।

(7) **अनुमानित या आरोपित मूल्य** (Imputed Value)—इसमें उन वस्तुओं तथा सेवाओं के अनुमानित या आरोपित मूल्य को भी शामिल किया जाता है जो बाजार में बिकने नहीं आतीं। इनमें चार प्रकार की क्रियाएँ शामिल हैं—

(अ) कर्मचारियों को नि:शुल्क मकान, भोजन, वस्त्र आदि के रूप में मिलने वाली सुविधाओं की कीमत, (ब) उत्पादकों द्वारा अपने उपभोग के लिए रखे जाने वाले उत्पादन की कीमत, (स) मकान में स्वयं रहने वाले मकान मालिकों के मकान का किराया, (द) वित्तीय संस्थाओं; जैसे—बैंकों की अमौद्रिक आय (Non-monetary Income), जैसे—एक बैंक चालू खातों पर कोई ब्याज नहीं देता परन्तु साथ ही वह इन खातों के लिए जो सेवा करता है, उस पर कोई खर्च नहीं लेता।

(8) **हस्तान्तरण भुगतान** (Transfer Payment)—सकल राष्ट्रीय उत्पाद की गणना में हस्तान्तरण भुगतानों (Transfer Payments) को सम्मिलित नहीं किया जाता है क्योंकि ऐसे सौदों का सम्बन्ध चालू वर्ष के उत्पादन से नहीं होता है। पुरानी कम्पनी के अंश-पत्रों तथा ऋण पत्रों का क्रय-विक्रय भी सकल राष्ट्रीय उत्पादन में सम्मिलित नहीं किया जाता है, क्योंकि इनसे सकल राष्ट्रीय उत्पादन में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं होती है। सामाजिक सुरक्षा एवं बीमा के अन्तर्गत प्राप्त भुगतान; जैसे—बीमा, भत्ता, पेंशन आदि को सकल राष्ट्रीय उत्पादन में नहीं जोड़ा जाता है।

(9) **वर्जित मदें** (Excluded Items)—सकल राष्ट्रीय उत्पाद में निम्नलिखित मदों को सम्मिलित नहीं किया जाता है—

(i) **पूँजी सम्पत्तियों के मूल्य में परिवर्तन**—पूँजी सम्पत्तियों के बाजार मूल्य में होने वाले परिवर्तनों के कारण होने वाले लाभ एवं हानियों को सकल राष्ट्रीय उत्पाद में सम्मिलित नहीं किया जाता है।

(ii) **कर**—कर के कारण सरकार द्वारा प्राप्त आय; जैसे—आय कर आदि को राष्ट्रीय उत्पाद की गणना में नहीं दिया जाता क्योंकि ऐसा करने में दोहरी गणना का भय रहता है।